हिन्दी विभाग
दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया, बिहार

द्वारा आयोजित

एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय ई–संगोष्ठी

विषय : "हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य"

दिनांक : 28 सितम्बर, 2021 ई. (मंगलवार)
समय : 11:00 बजे पूर्वाहन से 02:00 बजे अपराहन तक

आयोजन समिति

संरक्षक

प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह
माननीय कुलपति,
दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया, बिहार

प्रधान संयोजक

प्रोफेसर सुरेश चन्द्र
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
एवं
अधिष्ठाता, भाषा और साहित्य पीठ,
दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया, बिहार

संयोजक

डॉ. शान्ति भूषण
सहायक प्राध्यापक,
दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया, बिहार

सह संयोजक

डॉ. रामचन्द्र रजक
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया, बिहार

सदस्य

डॉ. रवीन्द्र कुमार पाठक
सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया, बिहार

डॉ. योगेश प्रताप शेखर
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया, बिहार

डॉ. कर्मानंद आर्य
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया, बिहार

डॉ. अनुज लुगुन
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया, बिहार

दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया, बिहार

दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया, बिहार(CUSB) संसद के केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 की धारा 25 द्वारा 2009 ई. में स्थापित सोलह केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में से एक है। विश्वविद्यालय का परिसर गया–पंचानपुर रोड पर स्थित ग्राम– करहरा, पो. फतेहपुर में अवस्थित है। यह विश्वविद्यालय 300 एकड़ भूमि पर फैला हुआ है। गया शहर एवं रेलवे स्टेशन से इस परिसर की दूरी लगभग 15 किलोमीटर है। इस विश्वविद्यालय में वर्तमान में स्वीकृत 14 स्कूलों के तहत स्थापित 25 विभागों / केंद्रों द्वारा 03 स्नातक एकीकृत, 27 स्नातकोत्तर और 21 पी–एच.डी. कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। सतत मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद् द्वारा इस विश्वविद्यालय को 'ए' ग्रेड प्राप्त है। NIRF की अखिल भारतीय सूची में यह विश्वविद्यालय शीर्ष 200 विश्वविद्यालयों की सूची में शामिल है एवं बिहार प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों में इसका पहला स्थान है।

हिन्दी विभाग

दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया का हिन्दी विभाग भाषा और साहित्य के अध्ययन – अध्यापन के साथ विद्यार्थियों में उच्चस्तरीय शोध–अभिरुचि विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है। यह भाषा और साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज की बहुआयामी सांस्कृतिक विविधताओं का अध्ययन कराता है। यह साहित्य और समाज की उत्कृष्ट परंपराओं एवं विरासत को अक्षुण्ण रखते हुए रचनाशीलता के विकास तथा ज्ञान के नये अनुशासनों की रचना एवं उनमें परस्पर संवाद की ओर उन्मुख है। इसके साथ यह विभाग बदलते वैश्विक परिदृश्य में नयी तकनीक एवं संचार की दिशा में अग्रसर होते हुए भारतीय भाषाओं को रोजगारपरक बनाने के लिए भी प्रयासरत है। वर्तमान में इस विभाग में दो कार्यक्रम पी–एच. डी. और स्नातकोत्तर (एम.ए.) संचालित हो रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी का उद्देश्य

हिन्दी की असाधारण विशिष्टताएँ इसे वैश्विक भाषा की पहचान प्रदान करती हैं। इसे बोलने-जानने तथा चाहने वाले बड़ी तादाद में विश्व के अनेकानेक देशों में रह रहे हैं। इसके साहित्य-सृजन की लगभग बारह सौ साल की प्रदीर्घ परंपरा में मध्यकालीन संत/भक्ति साहित्य को विश्वस्तरीय काव्य का दर्जा प्राप्त है। इसकी विपुल एवं विराट देशज शब्द-सम्पदा मानक अंग्रेजी शब्दकोशों को निरंतर प्रेरित-प्रभावित-संवर्द्धित करती रही है। यह वर्तमान प्रौद्योगिकीय आविष्कृतियों जैसे व्हाट्सएप्प, एस.एम.एस., ट्विटर, फेसबुक, ई-मेल, ई-बुक, ई-कॉमर्स, इन्टरनेट एवं वेब जगत् में अपने प्रयोक्ताओं को सहज अभिव्यक्ति देने में सामर्थ्यवान सिद्ध हुई है। इसकी व्यापक एवं विस्तृत भौगोलीय उपस्थिति को देखते हुए गूगल, याहू, माइक्रोसॉफ्ट, एप्पल, विप्रो, इन्फोसिस जैसी विश्वस्तरीय कम्पनियाँ हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा दे रही हैं।

हिन्दी की मूल प्रकृति ही लोकतांत्रिक तथा रागात्मक संबंध स्थापित करने वाली रही है। यह विश्व के सबसे विशाल लोकतंत्र भारतवर्ष की भाषा होने के साथ ही भारतीय उपमहाद्वीप के देशों पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, मालदीव, श्रीलंका, बांग्लादेश के साथ-साथ फिजी, मॉरिशस, गुयाना, त्रिनिदाद, टोबैगो तथा सूरीनाम की संपर्क भाषा भी है। यह खाड़ी देशों, मध्य-एशियाई देशों, रूस, यूरोप, अमेरिका, कनाडा, मैक्सिको आदि देशों के विश्वविद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन एवं ज्ञान निर्माण की भाषा बनकर, संयुक्त राष्ट्र संघ सहित अनेकानेक अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर विचार-विनिमय का सबल माध्यम बनकर विश्व मानवता को जोड़ने में एक सांस्कृतिक सेतु का भगीरथ कार्य कर रही है। दरअसल हिन्दी में माँ के दूध की तासीर है। विदेशी धरती पर रहकर अथवा भारत में रहकर कई विदेशी नागरिकों एवं विद्वानों ने हिन्दी से वैसा ही प्यार किया है जैसे कोई बेटा/बेटी अपनी माँ से करता है!

भाषा किसी देश के इतिहास का वह आईना होती है, जिसमें उस देश का भविष्य देखा जा सकता है। अपने गौरवशाली बहु-सांस्कृतिक परिवेश के दायित्व-बोध से संकल्पित हिन्दी भविष्य में अपेक्षाकृत बड़ी राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं रचनात्मक भूमिका का निर्वाह करने को प्रतिबद्ध है। इक्कीसवीं सदी का भारत और इसकी भाषाई पहचान हिन्दी की हैसियत निरंतर उन्नयन की प्रक्रिया में हैं। हिन्दी आत्मविश्वास और स्वाभिमान से लबरेज़ द्रुत गति से वैश्विक स्तर पर अपनी पकड़ मजबूत बना रही है। आने वाले समय में यह दुनिया की सबसे ज्यादा बोली व समझे जाने वाली भाषा बनने को कृतसंकल्प है।

हिन्दी की उक्त प्रेरणादायक वैश्विक स्थिति पर वाद-संवाद कर ज्ञानवर्धन करने और हिन्दी की दशा व दिशा को वैश्विक धरातल पर संवृद्ध बनाने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को लेकर हिन्दी विभाग, दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया के द्वारा दिनांक 28 सितम्बर, 2021 को "हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य" विषय पर एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा।

दिनांक: 28/09/2021 (मंगलवार)

उद्घाटन सत्र

अध्यक्षता
प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह
माननीय कुलपति
द.बि.के.वि.वि., गया, बिहार

मुख्य अतिथि
प्रोफेसर राजेंद्र प्रसाद
माननीय कुलपति
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार

स्वागत वक्तव्य
प्रोफेसर सुरेश चन्द्र
अधिष्ठाता, भाषा एवं साहित्य पीठ
द.बि.के.वि.वि., गया, बिहार

अकादमिक सत्र

वक्ता →

अध्यक्षता
डॉ. अरविन्द बिशेसर
महात्मा गाँधी इंस्टिट्यूट,
मॉरिशस

डॉ. विवेक कुमार शुक्ल
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी,
आर्हुस विश्वविद्यालय
डेनमार्क

डॉ. सर्वेश मौर्य
सहायक प्राध्यापक
एन.सी.ई.आर.टी., मैसूर,
कर्नाटक, भारत

श्री सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'
सम्पादक, स्पाइल (दर्पण)
ओस्लो, नार्वे

समापन सत्र

अध्यक्षता
प्रोफेसर सुरेश चन्द्र
अधिष्ठाता, भाषा एवं साहित्य पीठ
द.बि.के.वि.वि., गया, बिहार

मुख्य अतिथि
प्रोफेसर वैद्यनाथ लाभ
माननीय कुलपति, नव नालंदा महाविहार
(मानद विश्वविद्यालय), नालंदा, बिहार

हिन्दी विभाग
दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया, बिहार
"हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य"
विषयक एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय ई–संगोष्ठी

कार्यक्रम की रूपरेखा

दिनांक: 28/09/2021 (मंगलवार)

- लिंक वितरण - 10:30 बजे पूर्वाह्न

उद्घाटन सत्र - 11:00 बजे पूर्वाह्न से 11:45 बजे पूर्वाह्न तक

- अध्यक्ष : प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह
  माननीय कुलपति, द.बि.के.वि.वि., गया, बिहार
- मुख्य अतिथि : प्रोफेसर राजेंद्र प्रसाद
  माननीय कुलपति, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार
- स्वागत वक्तव्य : प्रोफेसर सुरेश चन्द्र
  अधिष्ठाता, भाषा एवं साहित्य पीठ, द.बि.के.वि.वि., गया, बिहार
- धन्यवाद ज्ञापन : डॉ. शान्ति भूषण, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, द.बि.के.वि.वि., गया, बिहार
- संचालन : नचिकेता, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, द.बि.के.वि.वि., गया, बिहार

अकादमिक सत्र - 11:45 बजे पूर्वाह्न से 1:30 बजे अपराह्न तक

<u>विषय: "हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य"</u>

- अध्यक्ष : डॉ. अरविन्द बिशेसर, अध्यक्ष, महात्मा गाँधी इंस्टिट्यूट, मॉरिशस
- आमन्त्रित वक्तागण :
  1. डॉ. विवेक कुमार शुक्ल, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, आर्हुस विश्वविद्यालय, डेनमार्क
  2. डॉ. सर्वेश मौर्य, सहायक प्राध्यापक, एन.सी.ई.आर.टी., मैसूर, कर्नाटक, भारत
  3. श्री सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक', सम्पादक, स्पाइल (दर्पण), ओस्लो, नार्वे
- प्रश्नोत्तरी सत्र
- धन्यवाद ज्ञापन : डॉ. रामचन्द्र रजक, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, द.बि.के.वि.वि.,गया, बिहार
- संचालन : पुष्पा कुमारी, शोधार्थी, द.बि.के.वि.वि., गया, बिहार

समापन सत्र - 1:30 बजे अपराह्न से 2:00 बजे अपराह्न तक

- अध्यक्ष : प्रोफेसर सुरेश चन्द्र
  अधिष्ठाता, भाषा एवं साहित्य पीठ, द.बि.के.वि.वि., गया, बिहार
- मुख्य अतिथि : प्रोफेसर वैद्यनाथ लाभ
  माननीय कुलपति, नव नालंदा महाविहार (मानद विश्वविद्यालय), नालंदा, बिहार
- धन्यवाद ज्ञापन : डॉ. अनुज लुगुन, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, द.बि.के.वि.वि., गया, बिहार
- संचालन : चाहत, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, द.बि.के.वि.वि., गया, बिहार

पंजीकरण लिंक : https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfxp6rRPmTvmxIoY4VKIlG1_MpG2LF9vXlzHfES_V__0kQJwQ/viewform

पंजीकरण निर्देश

पंजीकरण नि:शुल्क है। पंजीकरण की अंतिम तिथि 27/09/2021 ई. है। पंजीकृत एवं सभी सत्रों में उपस्थित प्रतिभागियों को ई–संगोष्ठी के आयोजन के 30 दिन के अन्दर प्रमाण पत्र प्रदान कर दिए जायेंगे।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें – 9958310210, 8840138211